शब्दों का समन्दर

अंशु हर्ष

आवरण सौजन्य

सोमेन्द्र हर्ष

शब्दों
का समन्दर

अंशु हर्ष

बोधि
साहित्य जन-जन के लिए

बोधि प्रकाशन
सी-46, सुदर्शनपुरा इंडस्ट्रियल एरिया एक्सटेंशन
नाला रोड, 22 गोदाम, जयपुर-302006
फोन : 0141-2213700, +91-9829018087
ई-मेल : bodhiprakashan@gmail.com

कॉपीराइट © अंशु हर्ष

प्रथम संस्करण : नवम्बर, 2013

द्वितीय संस्करण : अप्रेल, 2019

ISBN : 978-93-88686-55-6

कम्प्यूटर ग्राफिक्स : बनवारी कुमावत 'राज'

आवरण सौजन्य : सोमेन्द्र हर्ष

मुद्रक
तरु ऑफसेट, जयपुर # 09829018087

मूल्य : ₹ 199/-

SHABDON KA SAMANDAR (POETRY) by Anshu Harsh

Dedicated to
Parents, Family
&
Friends

अनुक्रम

बचपन की अमीरी	9
बढ़ता हुआ बचपन	10
तुम बड़े मैं बच्चा हूँ	11
बचपन की याद	12
बारिश की बूँदें	13
फुहारों का खेल	14
आसमान का प्यार बारिश	15
अहसास	16
मैं और तुम	17
हम	18
जरूरी नहीं होता	19
सौग़ात	20
ख़त	21
समझ	22
बेरंग होते हैं अहसास	23
तस्वीर	24
उदासी	25
सादगी	26
शब्दों का समन्दर	27
वक़्त है गुज़र जाएगा	28
दोस्ती : एक	29
दोस्ती : दो	30
रिश्ते	31
याद आता रहेगा	32
एक ख़ामोश अहसास	33
सुकून	34
मेरे ख़्वाब	35
मेरे मन की दुनिया	36
तुम्हारा रूठना	37
सूखा पेड़	38

दिल 39
कभी ग़म, कभी ख़ुशी 40
दिन का हिसाब 41
वक़्त 42
ऐसा कोई नहीं था 43
इस आस से बैठा हूँ 44
इस धूप की तरह 45
रिश्ते 46
क़ैद 47
ख़त : एक 48
ख़त : दो 49
मेरे शब्द 50
एक टुकड़ा धूप 51
भूलने के लिए 52
तुम्हारे होने का अहसास 53
भावनाओं की राह 54
पहचान जाना तुम 55
किसी के जाने से 56
रिश्तों की शाखाएं 57
बदलाव 58
खोया हुआ कुछ 59
ज़िन्दगी का सुकून 60
ख़ामोश बातें 61
साथ 62
आखरी पड़ाव 63
अमृता 64
मन का द्वार 65
अ मन 66
शब्दों की खनक 67
नया साल 68
तुम तक 69
तुम 70
तस्वीरें 71
ज़िन्दगी के पल 72
जानते हो 73
बादल और पहाड़ 74

रिश्ते 75
सब तेरा 76
तलाश 77
चाँद से बातें 78
चाय 79
चिड़िया 80
अमावस 81
प्रश्नचिह्न 82
कल रात 83
अलौकिक संसार 84
दोस्त 85
नींद का बादल 86
नज़्म 87
मैं समन्दर तुम लहर 88
ख़्वाब 89
ख़्वाहिश 90
फिर से सीखने को जी चाहता है 91
तुम बहुत याद आ रही माँ 92
अधूरी सी मुलाकात 93
उम्र की कहानी 94
एक सफ़र भूटान का 95
चाँद 96
हाथों में हाथ थाम 97
उस शहर की राहों पे 98
पड़ाव 99
राधा और कृष्ण 100
तुम 101
प्रकाश पर्व 102
आवरण 103
वैरागी मन 104
पत्थर की मूरत से तुम 105
असुरक्षित यात्रा 106
वेनिस 107
मेरी प्रेरणा 108

जीवन प्रबंधन समूह
Life Management Group

स्वभाव में जिएं,
संसार में रहें
Behave naturally,
Live happily

पं. विजयशंकर मेहता
(जीवन प्रबंधन गुरु)

'**शब्दों** का समन्दर' अंशुजी के कविता प्रेम का आईना है। हर शब्द, हर पंक्ति इस बात की साक्षी प्रतीत होती है कि आपने समाज के विभिन्न पहलुओं को बारीकी से देखा, समझा और जांचा है। शब्द चयन के प्रति सावधानी और सरल-सुलझी शैली के साथ जिस प्रकार से पाठकों तक अपनी भावनाएं पहुंचाई गई हैं निर्विवाद रूप से प्रशंसनीय है।

कुल मिलाकर समग्र कविताएं अंशुजी के सामाजिक मंथन एवं सहज व्यक्तित्व का प्रतिबिंब है। अपने लंबे अनुभव-चिंतन व विराट शब्द शृंखला के माध्यम से आगे भी इसी प्रकार समाज उपयोगी सृजन करती रहें ऐसी मंगल कामनाओं के साथ बहुत-बहुत बधाइयां...।

पं. विजयशंकर मेहता
जीवन प्रबंधन गुरु

बचपन की अमीरी

''बचपन की वो अमीरी न जाने कहाँ गई
जब बारिश के पानी में हमारे भी जहाज तैरा करते थे।''

बचपन की वो हिम्मत, वो हौसला, कहीं छुप गया
जब कोहरे की सुबह साइकिल पर निकल पड़ते थे
वो मासूमियत अब कहाँ
जब छत पर बैठ तारे गिना करते थे
अब कहाँ वो बेफ़िक्री जब
किसी के उदास होने की फ़िक्र भी ना किया करते थे
अब कहाँ ऐसी हुकूमत
जब रेत के घर बना उन पर नाम लिख दिया करते थे
अब कहाँ वो जिंदादिली जब
मिट्टी में पानी मिला खूब कीचड़ से खेला करते थे
अब कहाँ वो अलबेलापन जब
गुब्बारों के रंग पर अटक जाया करते थे
अब समझदारी, दुनियादारी, वफादारी सब निभाने में लगे हैं
बचपन की वो नादानी कहाँ गयी
जब इन सबको समझा भी ना करते थे।

बढ़ता हुआ बचपन

उम्र बढ़ रही है पर बचपन नहीं जाता
या यूँ कहूँ कि
मैं उस बच्चे को भेजना नहीं चाहता
भूल जाऊँगा खुद को ग़र वो चला गया
नादान हूँ
खुद के सिवा कुछ सोचना नहीं चाहता
वो है तो जिद है, कुछ कर गुजरने की
बड़प्पन में समझदारी है, डर है
कुछ किया नहीं जाता
दिल के किसी कोने में बसी है
आज भी तुम्हारी याद
बचपन के उस प्यार को
मैं भुलाना नहीं चाहता...।

तुम बड़े मैं बच्चा हूँ

सुबह की धूप में आलस की अँगड़ाई
सिर्फ मैं ले सकता हूँ तुम नहीं
क्योंकि तुम बड़े और मैं बच्चा हूँ

नज़रें चुराकर दूध का गिलास नाली में
मैं बहा सकता हूँ तुम नहीं
क्योंकि तुम बड़े और मैं बच्चा हूँ

सड़क पर भरे बारिश के पानी में छपाक-छई
मैं कर सकता हूँ तुम नहीं
क्योंकि तुम बड़े और मैं बच्चा हूँ

दीवारों पर अपनी कल्पना की चित्रकारी में रंग
मैं भर सकता हूँ तुम नहीं
क्योंकि तुम बड़े और मैं बच्चा हूँ

कहीं भी रोना, कभी भी हँसना
उसी क्षण अपनी भावनाओं को प्रदर्शित
मैं कर सकता हूँ तुम नहीं
क्योंकि तुम बड़े और मैं बच्चा हूँ

ये जीवन जो तुम जी रहे हो
मैं बाद में भी जी सकता हूँ
पर मेरा जीवन सिर्फ मैं जी सकता हूँ तुम नहीं
क्योंकि तुम बड़े और मैं बच्चा हूँ।

बचपन की याद

याद हैं वो समाँ, वो पल याद हैं
बचपन के वो सुनहरे दिन याद हैं।

जी भर के खेलना रेत के मैदान में
और वो नन्ही–सी चहलकदमी याद है।

याद है वो बाग की कलियों को खिलते देखना
और नज़रें चुराकर उनको तोड़ना याद है।

अपने–आप को बहुत कुछ समझ लेना
और बचपन के बड़प्पन पर इतराना याद है।

आम के खेत में कैरियाँ देख अचरज़ करना
फिर उनके आम बनने का इंतज़ार याद है।

बारिश की बूँदें

नींद भरी आँखों से देखा
कोई दे रहा था दस्तक दरवाजे पर
उठ कर देखा...
ये तो पहली बारिश की बूँदें थी
और खुश हो गया मन
मनचाहा मेहमान जो आया था
जो अपने संग ले आया था
सुनहरी सूरज की किरणें
इन्द्रधनुष, सौंधी-सी माटी की महक़
सुहानी-सी पुरवाई और
हरियाली में डूबी पूरी क़ायनात
खुले रहने दो दरवाजों को
और बहने दो मौसम को ख़ुमारी से
ताउम्र...।

फुहारों का खेल

आसमान से बरसता पानी
कभी तेज़ कभी रिमझिम...
सुखद अहसास है...
ठंडी हवाओं का चलना
और बालकनी में बैठ
फुहारों से खेलना
लेकिन... उसी पल याद आती है
कुछ ऐसे लोगों की
जिनके सिर पर है खुला आसमान
और खुली सड़कें ही हैं जिनकी बालकनी
क्या वो भी खेलते हैं इन फुहारों के साथ या
ये फुहारें खेल जाती हैं उनकी ज़िंदगियों से...।

आसमान का प्यार बारिश

धरती के लिए छलकता प्यार है बारिश
आसमान के सीने का दर्द या फिर
बूँदों से नफ़रत जो
मज़बूर कर देती है उसे छोड़ने को
फिर भी एक दिन वही बूँद
फिर से जा मिलती है आसमान से
और ये सिलसिला चलता रहता है
अनवरत्...।

अहसास

ख़ुशी का अहसास
मासूम की ख़्वाहिश
जवाँ दिल की हसरत
बीती हुई यादें
सौंधी-सी महक़
मधुर संगीत
सुहानी-सी हवा
क़ायनात पर निख़ार
लाती है
बारिश की ये बूँदें।

मैं और तुम

जैसे
मंजिल की राहें
सागर का किनारा
धूप और छाँव
बारिश और बादल
चन्दन और पानी
सावन के झूले
दिन और रात
रोशनी और चिराग़
आस और विश्वास
माटी की सुगंध
फूलों की खुशबू
ईश्वर की प्रार्थना
इन्द्रधनुष के रंग
वैसे ही
मैं और तुम।

हम

नींद मेरी ख़्वाब तुम्हारे
संगीत मेरा लफ़्ज तुम्हारे

मैं साज हूँ तुम आवाज़ हो
मैं गीत हूँ तुम तुम अंदाज हो

मैं बादल हूँ तुम बरसात हो
मैं मन और तुम मचलते जज़्बात हो

मैं ज़िन्दगी तुम साँस हो
मैं शायर और तुम अंदाज़ हो

मैं नज़र और तुम अनकही बात हो
मैं दिल और तुम धड़कनों की आवाज़ हो।

जरूरी नहीं होता

सिर्फ़ दिल रखने का हुनर होता है
वरना कोई शख़्स किसी के लिए जरूरी नहीं होता।

यूँ तो ख़्वाहिशें अनगिनत हैं इस दिल की
पर हर सपना पूरा हो जाये यह जरूरी नहीं होता।

दिल की बातों को दिल में ही रखिये
हर शख़्स से दिल मिले जरूरी नहीं होता।

वक़्त के तीर तो हमने भी झेले हैं बहुत
पर हर ज़ख्म भर जाये ऐसा नहीं होता।

दिल में जलाये हैं चिराग़ मैंने तेरी यादों के
जलता चिराग़ उजाला फैलाए सदा ऐसा नहीं होता।

सौग़ात

सूखी रेत पर पानी की कोई बूँद गिरी
तुमसे मिल कर ये रूह कुछ इस तरह खिली।

वादियों के फूल खिलने लगे कुछ इस तरह
नूर की बूँद इन जड़ों को जैसे आज मिली।

मोहब्बत के फ़रिश्ते बन कर तुम ऐसे आये हो
अँधेरी रात को सितारों की जैसे सौग़ात मिली।

ख़त

वक़्त जो चला गया है तुम्हारे साथ का
उसे भी ख़त लिखा है
एक बार फिर लौट आने के लिए
देखते हैं...
बदला वक़्त ख़त का मतलब जानता है
या उसे भी ई-मेल करना पड़ेगा...।

(पता है मुझे बीता हुआ वक़्त वापस नहीं आता, मगर यूँ ही...)

समझ

एक खाली कागज़ का टुकड़ा
थमा दिया तुमने मेरे हाथ
पहले तो मैं समझ नहीं पाया
क्योंकि शब्द नज़र नहीं आ रहे थे उसमें
लेकिन महक़ रहा था कोना-कोना
और
दमक रहा था कोरा कागज़
फिर मैं समझा
तुमने अपनी ज़िंदगी थमा दी है मुझे
और मुझे इसमें इन्द्रधनुष के रंगों से
रंगीन शब्द लिखने हैं हमारी ज़िन्दगी में...

...क्यों सही समझा ना मैंने... ?

बेरंग होते हैं अहसास

बेरंग होते हैं अहसास
चाहे सुख हो या दुख
चाहत हो या नफ़रत
डर हो या हैरानी
सुखद मिलन हो या जुदाई
ख़ुशी हो या कुछ खोने का ग़म
छलक आते हैं
मेरे भावों का सन्देश लिए
ये आँसू।

तस्वीर

तुम्हारी तस्वीर क़ैद थी
यादों के पिंजरे में
अच्छा हुआ तस्वीर को ही क़ैद रखा...
अब तुम तो बदल गए हो पर
तस्वीर आज भी वैसी ही है...।

उदासी

आज बहुत उदास हुआ मन
जब तुमने कहा...
'ज़िंदगी से डर लगता है'

मैं सोचने लगा
मैं तो तुम्हें अपनी ज़िंदगी मानता हूँ...
फिर तुम्हारी नज़र में ज़िंदगी क्या है ?

(क्या साथ होना और साथ देना अलग बात है... ?)

सादगी

जीवन में वो सादगी अच्छी लगती है...
जब चाय माटी के कुल्हड़ में पी जाती है।
वो सादगी सुहानी लगती है...
जब गीली मिट्टी से सौंधी महक़ आती है।
वो सादगी मन को भाती है...
जब खस की टाट पर पानी की बौछारें ठंडी हवाएँ लाती हैं।
वो सादगी मन को सुकून देती है...
जब बर्फ के गोले पर मीठी रसीली रबड़ी अपना स्वाद बिखेरती है।
वो सादगी बड़ी सुरीली लगती है...
जब एक बाँस हवा से बजने लगता है
और कान्हा की मुरली कहलाती है।
सादगी बड़ी अपनी-सी लगती है...
सादगी बड़ी ख़ूबसूरत-सी लगती है।

शब्दों का समन्दर

ख़ामोशी में है शब्दों का समन्दर
जब कभी ख़ामोश रहती हूँ...
उस समन्दर में डूब कर
मन के जाल में कई शब्दों को पकड़ लाती हूँ...
शब्द कुछ जाने, कुछ अनजाने
कुछ अपने, कुछ बेग़ाने
कहीं जोड़ कर, कहीं तोड़ कर
कुछ अनुभव और कुछ हसरतें
एक नयी रचना बना कर आती हूँ...
जब कभी ख़ामोश रहती हूँ...।

वक़्त है गुज़र जाएगा

अमावस की अँधेरी रात है फिर भी
तारों से रोशन जहाँ है
कल फिर से चाँद आयेगा
वक़्त है गुज़र जाएगा...
जेठ की तपती दुपहरी है
सूरज भी कड़ा प्रहरी है
कल रिमझिम सावन आयेगा
वक़्त है गुज़र जाएगा...
एक नन्हा-सा बीज बोया है
जल से सींचा और हिफाजत से संजोया है
कल पेड़ बन फलों से लदा नज़र आयेगा
वक़्त है गुज़र जाएगा...
ज़िंदगी अनसुलझी पहेली है
जितना सुलझाओ उतनी उलझी है
श्रद्धा और सबूरी ही जीवन में काम आयेगा
वक़्त है गुज़र जाएगा...
वक़्त अनमोल है, गतिशील है
इसको गँवाया अगर
तो एक दिन ये हमें गँवायेगा
वक़्त गुज़रा है
कल, आज और कल भी गुज़र जाएगा...।

दोस्ती : एक

मैं सिक्का नहीं हूँ
जो जेब से गिर कर, एक बार ख़नक कर रह जाऊँगा...
मैं वो नन्हा-सा बीज हूँ जो जमीन पर गिरा,
तो एक दिन बड़ा पेड़ बन कर,
तुम्हारी ज़िन्दगी को चिलचिलाती हुई धूप से बचा कर,
अपनी छाँव में बिठाऊँगा
मैं दोस्ती का वो बीज हूँ...
जो एक बार फल गया तो...
हर रिश्ते में जी कर दिखाऊँगा।

दोस्ती : दो

मैं नहीं दूँगा तुम्हें हर समस्या का हल,
फिर भी सुनूँगा तुम्हारे जज़्बात और
साथ बैठ निकालेंगे हल

मैं नहीं बदल सकता तुम्हारे अतीत के पल
और भविष्य की कहानियाँ
पर अभी हूँ तुम्हारे साथ इस पल

मैं नहीं रोक सकता तुम्हारे कदमों को डगमगाने से,
सिर्फ दे सकता हूँ अपना हाथ सँभलने के लिए

तुम्हारी ज़िन्दगी के फैसले तुम्हारे अपने होंगे,
मैं दूँगा उन्हें सहारा, उत्साह और मदद
जब तुम चाहोगे

मैं नहीं रोक सकता तुम्हारे दिल को टूटने से,
पर तुम्हारे पास हूँ तुम्हें सहारा देने
और उन टुकड़ों को जोड़ने के लिए

मेरी दोस्ती की तुम्हारे जीवन में कोई बंदिशें नहीं होंगी,
मैं नहीं चाहता तुम उन बेड़ियों में उलझ जाओ,
सिर्फ़ जियो मेरे साथ उत्साह, उमंग और बिना शर्तों के साथ

मैं नहीं बता सकता कौन हो तुम
पर मैं हूँ तुम्हारा दोस्त... एक सुलझी हुई दोस्ती के साथ।

रिश्ते

ज़िंदगी को जरूरत होती है रिश्तों की
क्योंकि जब कोई अपना नहीं होता
तो ढूँढने लगता है इंसान
बेगानों में अपने को
और बन जाते हैं ऐसे रिश्ते
जिनके नाम नहीं होते
बस होते हैं
प्रेम समर्पण और अपनों से रिश्ते...।

याद आता रहेगा

ज़िन्दगी भर याद आता रहेगा मुझे
तुम्हारा कुछ ना कहना
और मेरा सब कुछ समझ लेना
ख़ामोशियों की चादर पर
नये कसीदे बनाना
और सो जाना उस चादर पर
नये सपनों की तलाश में...।

एक ख़ामोश अहसास

एक ख़ामोश अहसास
नज़रों की दुआ
होंठों की मुस्कान
धड़कन की आवाज़
फूलों का खिलना
बूँदों का बरसना
खोने का डर
ना मिलने का ग़म
आँखों का भर आना
ख़ामोशियों का सिलसिला
प्यार कितने रूप हैं तुम्हारे।

सुकून

कितना सुकून देती है
एक नन्ही–सी बूँद
उमस के बाद बरसात का आ जाना और
घुटन के बाद
आँखों का बरस जाना...।

मेरे ख़्वाब

मेरे ख़्वाब बिखरे हैं रात के आँगन में
तुम आना और समेट लेना मेरे ख़्वाबों को
क्योंकि जरूरत है
मेरे ख़्वाबों को
एक ठोस धरातल की
और मैं जानती हूँ
तुम्हारा होना
मतलब
मेरे सारे ख़्वाबों का साकार होना है।

मेरे मन की दुनिया

मेरे मन की दुनिया
बहुत निराली
हर तरफ़ ख़्यालों के फूल खिलते हैं
हर तरफ जज़्बातों के गीत गुनगुनाते हैं

और कभी बिलकुल तन्हाई
तो कभी नेशनल हाइवे-सा
छोटे बड़े ख़्याल चलते ही रहते हैं
अपनी मस्ती में
बड़ी स्वछंदता से
ख़्याल मेरे कभी तुम्हारे और कभी
सारी क़ायनात के
कभी-कभी मन यह भी सोचता है
क्या यह मन मेरा ही रहेगा
मेरे ना होने पर भी...।

(क्या मन और आत्मा का अंतर समझ में आयेगा या ये सवाल, सवाल ही रह जाएगा...)

तुम्हारा रूठना

तुम्हारा रूठना, फिर चुप हो जाना
अच्छा लगता है, क्योंकि तुम जानते हो
मैं फिर से तुम्हें मना लूँगी,
इसी आत्मविश्वास के साथ
हर बार रूठ जाते हो
तुम्हारा आत्मविश्वास
खुद पर है या मेरे प्यार पर ?

सूखा पेड़

एक बड़ा सूखा पेड़ और
उसके नीचे फैली पत्तियाँ
यही सीख देती है जीवन में...
कैसे भी परिस्थिति आये
अटल रहो, मत छोड़ो अपनी जड़ें
चाहे बिखरना पड़े
क्योंकि परिस्थितियाँ फिर बदलेंगी
नव पल्लव नज़र आयेंगे
और वृक्ष फिर से हरा-भरा हो जाएगा
और अगर छोड़ दी अपनी जगह ही
तो वजूद ही मिट जाएगा।

दिल

जब कभी दिल ने तुमसे मिलना चाहा
जब कभी दिल को तुम्हारी याद आई
देख लिया उस आसमान की तरफ
और चाँद तारों की रोशनी में
महसूस कर ली तुम्हारी नज़रें
क्योंकि दिल की एक धड़कन कह रही है
कहीं दूर से ही सही तुमने भी
देखा होगा उस आसमान की तरफ़
और हमने नज़रों की चमक को
महसूस कर लिया चाँदनी में
जो करीब होकर, कभी हमने मिलाई थी।

कभी ग़म, कभी ख़ुशी

कभी अकेले बैठते ही
चलने लगता है
अंतर्द्वंद
कभी अपना, कभी पराया
कभी ग़म, कभी ख़ुशी
कभी अतीत का महासागर
कभी भविष्य के सपने
कभी तुम्हारे अल्फ़ाज
कभी मेरे अपने
शहर की उस बड़ी सड़क की तरह
हसरतें चलती ही रहती हैं अनवरत्...।

दिन का हिसाब

हर शाम बैठ कर जब हिसाब लगाता हूँ
पूरे दिन का

सोचता हूँ
कैसे गुजरे इतने लम्हे
बिना तुम्हें याद किये
फिर सोचता हूँ
भूल भी तो कहाँ पाया था
तुम्हें एक भी लम्हा
हर घड़ी में तुम्हारी याद तो थी
बस बात नहीं थी।

(यादों की अपनी दुनिया होती है जो हर इंसान अपने अन्दर जीता है, अकेले)

वक़्त

वक़्त ना तुम्हारे हाथ हैं, ना पैर
फिर भी चलते हो निरंतर
बदलते हो रूप और रंग भी
वक़्त तुम बड़े कठोर हो
मज़बूर कर देते हो
हर इंसान को
अपने साथ चलने के लिए
और अगर पीछे रह जाता है कोई
तो पिछड़ जाता है ज़िन्दगी की रेस में
वक़्त तुम बहुत जिद्दी हो
नहीं लौटते किसी के कहने पर
क़ाश! बाँध लेते तुम्हें भी इस तरह
जिस तरह बाँधते हैं घड़ी कलाई पर।

ऐसा कोई नहीं था

बात कहने के बाद मुझे ये कहना पड़े...
मेरे कहने का ये मतलब नहीं था...
अनकही बात जो जान ले ऐसा हमसफ़र कोई नहीं था

यूँ तो दोस्तों की कमी नहीं थी इस जहान में
लेकिन दिल की धड़कन गिन ले ऐसा कोई नहीं था...

हाथ तो हजारों उठे थे मिलाने के लिए
गिरते हुए को थाम ले, ऐसा कोई नहीं था।

इस आस से बैठा हूँ

इस आस से बैठा हूँ तेरे सज़दे में आज
चुनौतियों को सँभालने की शक्ति मिलेगी बेहिसाब

सवाल भी मेरे हैं और जवाब भी मेरे
इन दोनों के दरम्यान है तेरा विश्वास

मैं अकेला नहीं हूँ इस जीवन पथ पर
कड़ी धूप की परछाई में है तेरे होने का अहसास

इस धुएँ के साथ पहुँच रही है मेरी दुआ
और आती हुई ख़ुशबू है तेरी रज़ा का अहसास...।

इस धूप की तरह

क्यों मैं तुझे सुन नहीं सकता
जब तेरे होने का अहसास है मुझे
तेरे सज़दे में सर झुक जाता है मेरा
फिर भी कभी तेरे ना होने का विश्वास डगमगाता है मुझे
क्यों दुनिया की भीड़ में भी अकेला हो जाता हूँ मैं
जब हर कदम तेरे साथ होने की आस है मुझे
शायद उलझ गया हूँ
जीवन की इन घुमावदार राहों में
इस धूप की तरह
जो जल रही है तेरे सज़दे में
और मैं जल रहा हूँ इस धूप की तरह।

रिश्ते

क्यों बन जाते हैं कुछ रिश्ते
जिनके कोई नाम नहीं होते
सिर्फ़ कुछ देने की हसरत
साथ गुज़रते, मुस्कुराते पल
कुछ वक़्त की गुज़ारिश
लहरों में आती सीपियों की तरह
एक बहाव के साथ आते हैं ये रिश्ते।

क़ैद

क़ैद कर लिया
पकड़ लिया
एक जाता हुआ लम्हा
देखो वो रहा मेरी डायरी में
लाल ख़ुशबूदार कलम से लिखा हुआ।

ख़त : एक

सप्ताह में एक दिन तय था, तुम्हें ख़त लिखने का
जिस दिन वो तुम्हें मिलता, तुम वापस जवाब देते

तुम तो कहते हो कोई शर्त नहीं होती प्यार में
फिर क्यों इंतजार करते हो मेरे ख़त का
अगला ख़त लिखने के लिए...।

ख़त : दो

पहले प्यार का पहला ख़त
शनिवार को लिखा
क्योंकि सुना था कहीं
शनिवार को शुरू हुआ काम स्थाई होता है
और यही तो मैं चाहता था
लिखते रहना हर वक़्त
क्योंकि
लिखते वक़्त
हर लम्हा मैं सोचूँ तुम्हें
बताऊँ तुम्हें उस वक़्त के बारे में
जो बीत रहा है तुम्हारे बिना
तुम्हारी यादों के साथ...।

मेरे शब्द

मेरे शब्दों में छुपे वो भाव कहाँ से लाओगे
मेरे दिल की बात को तुम अपना कैसे कह पाओगे

दिल की बातों को तुम दोहरा तो लेते हो
दिल में छुपी वो आरजू कहाँ ढूँढ पाओगे

फ़ासला तो नज़रों का धोखा भी हो सकता है
यही सोचोगे तो हाथ कैसे बढ़ाओगे

याद, आरज़ू, मोहब्बत, और वफ़ा से चलती है ज़िन्दगी
इनसे दूर रहोगे तो जी कैसे पाओगे...।

एक टुकड़ा धूप

मन में कुछ अँधेरा सा है
आँखों में कुछ नमी-सी है
कहीं बर्फ सी जमी हैं यादें
तो कहीं रोशनी की कमी-सी है

ऐसे में क्या चाहिये ज़िंदगी को

सिर्फ एक टुकड़ा धूप।

भूलने के लिए

ज़िंदगी के एक मोड़ पर
छोड़ आया हूँ...
कुछ अनकहे शब्द,
कुछ बातें जो अधूरी हैं
कुछ भावनाएँ जो व्यक्त नहीं हैं
कुछ अपने-आपको
कुछ तुम्हारे साथ को

छोड़ तो आया हूँ
लेकिन
क्या सिर्फ छोड़ देना काफी होता है
ज़िंदगी में भूलने के लिए।

तुम्हारे होने का अहसास

आज फिर एक बार तुम मुस्कुराई
ऐसा अहसास हुआ उस पीले फूल को देखकर
वो रंग जो तुम्हारी पहचान है
वो रंग जिसमें तुम्हारी याद है
वो रंग जिसमें तुम्हारी छवि है
इस रंग में तुम्हारी मुस्कुराहट का अंदाज है
ये रंग तुम्हारी कहानियों का रंग है
ये रंग तुम्हारे आँचल की सुगंध है
इस रंग में सादगी है तुम्हारे स्वभाव की
इस रंग में तपस्या है तुम्हारे जीवन की
यह रंग पहचान है तुम्हारी श्रद्धा का
यह रंग प्रकाश है तुम्हारी आस्था का
यह रंग साक्षी है तुम्हारी अलौकिकता का
इस रंग में अहसास है राम जी के होने का
इस रंग में मिठास है तुम्हारे दिए पताशों की
और सबसे बढ़कर
इस रंग में अहसास है तुम्हारे होने का
और तुम्हारे होने के अहसास मात्र से
खिल जाता है मन इसी पीले फूल की तरह।

भावनाओं की राह

भावुकता से जियो या भावनाओं में
यूँ तो सवाल एक-सा लगता है
पर गहराई में जाकर सोचा जाए
भावुकता का रास्ता
जीवन के ऐसे ग़र्त तक जाता है
जहाँ से लौटकर आना मुश्किल हो जाता है
और भावनाओं की राह जीवन को सही दिशा दिखाती है।

पहचान जाना तुम

आना, जाना और फिर से आना
अगर यही संसार का नियम है तो
नज़र आना जरूर मुझे
किसी और रूप में ही सही
पर पहचान जाना तुम मुझे।

किसी के जाने से

जीवन, सागर के उस किनारे जैसा
जिसमें समय के साथ कभी
शंख, सीप, मोती मिलते हैं
तो कभी टूटी-फूटी वस्तुएँ भी
और इन सबका आना होता है
लहरों के साथ और
ये तेज और धीमी लहरें
जीवन में आने वाले हर शख़्स का
बोध करवाती हैं
जैसे किसी के आने से
सुख की अनुभूति होती है और
किसी के जाने से...।

रिश्तों की शाखाएं

चाहतों का एक विशाल वृक्ष
समेटा है घर के आँगन में
क्योंकि
अब कहाँ वक़्त पेड़ों की छाँव में बैठ
सुहानी हवाओं से बात करने का
एक आभासी दुनिया में जीने लगे हैं हम

पता है कट जाएँगी हसरतें फैलते ही
इस बोंजाई की तरह
अपनी छोटी-सी दुनिया में जीने लगे हैं हम

आँगन जहाँ पनपती हैं रिश्तों की शाखाएं
और हसरतों के फूल
आज इन्हीं शाखाओं को काट जीने लगे हैं हम।

बदलाव

वक़्त हमेशा चलता रहता है अनवरत
बिना रुके बिना थमे
कुछ भी तो स्थायी नहीं है जीवन में
ना खुशी ना ग़म
अब देखो ना
रोशनी का त्यौहार भी बीत गया
कितना शोर था, उसके आने का
सब कुछ नया सा, रोशन
मिठास लिए व्यवहार
फिर अब वही अकेलापन
ज़िन्दगी का अलबेलापन
और मैं फिर से वक़्त के बीतने का
इंतज़ार करूँगा
अगला त्यौहार आये
उसके लिए फिर से नए सपने संजोऊंगा
त्यौहार के बाद का सूनापन
अपने अंदर लिए
बीते हुए लम्हों से
मुस्कुराहटें आबाद रखने की कोशिश करूँगा।

खोया हुआ कुछ

आँखों में जो गहराई तलाशते हो
वो अब यहाँ नहीं रहती
चेहरे की जिस मासूमियत की चाहत रखते हो
वो अब यहाँ नहीं रहती
जिन होठों पे शब्द हो मोहब्बत भरे
वो प्यार की गहराई
अब यहाँ नहीं रहती
जिसके बिखरते शब्द भी वही कहते हैं
जो दिल में नज़र आता है
वो खूबसूरत अनुभूति
अब यहाँ नहीं रहती
मत तलाश करो इस दुनिया में
अब सरलता की
वो खूबसूरत सादगी
अब इस दुनिया में नहीं रहती।

ज़िन्दगी का सुकून

मेरी सरल सहज सी दिखने वाली
ज़िन्दगी का सच बताती हूँ
टूट कर बिखर कर
मैं भी हर दिन मिट्टी में मिल जाती हूँ
फिर उसी मिट्टी से एक दिया बना
एक ज्योत लगाती हूँ
मुझे नहीं ज़रूरत रोशनी की
मेरे अपनों की राह में रख आती हूँ
फिर उसी माटी का एक कुल्हड़ बना
मसाले की चाय बना उसमें पी जाती हूँ
हर कड़वाहट ज़िन्दगी की
हर घूंट के साथ निगल जाती हूँ
वो जो साथ देता है हर कदम पर
उस अदृश्य शक्ति को
आत्मसात किये जाती हूँ
माँ का सुर्ख़ कोमल गुलाब थी
इसीलिए तो अब काँटों पे
मुस्काती हूँ
कभी कभी बहुत थक जाती हूँ
ज़िन्दगी से
मैं भी एक सुकून भरी नींद चाहती हूँ।

ख़ामोश बातें

जब मेरी ख़ामोशी
तुम्हारी ख़ामोशी से बात करती है
अनुभूतियों के सामने
शब्द कहाँ टिक पाते हैं
नर्म रुई के बादलों में
तुम्हारे नर्म दिल का अहसास है
उसी के बीच से आती हुई
सूरज की तेज किरणों में
तुम्हारी बातों का आक्रोश है
मंद चलती हुई हवा
जैसे तुम्हारी बात कह रही हो
सागर की लहर की हलचल में
तुम्हारा विशालता का स्वरूप है
अब बताओ कहाँ जरूरत है
हमारे साथ की
किसी बात की
चल रहे हैं ना अकेले
बिना मिले खामोशी से
और देखो कितनी कैफ़ियत
है इस ख़ामोश मिलन में।

साथ

खुशियाँ रहती दामन में और जीवन में अमन होता
साथ हो तुम-सा उम्र भर, तो मुस्कुराना-अच्छा लगता है।

एक तेरे साथ से आती है दुनिया बदलने की ताकत
तेरा हाथ, हाथ में हो तो जीवन सुहाना लगता है।

धड़क जाता है दिल तेरे आने की आहट पर
तेरा चले जाना बड़ा नाग़वार लगता है।

यूँ तो साथी बहुत मिल जायेंगे जीवन में
हमसफ़र कोई अपना-सा हो तो सफ़र सुहाना लगता है।

आखरी पड़ाव

कितनी शिद्धत से
हर जीवन में
एक घरौंदा
बनाते हैं हम
तिनका तिनका चुन
एक एक दीवार
सजाते हैं हम
क्यों चलता रहता है
ये सिलसिला
हर जीवन में
क्यों रूह का सफ़र
पार कर जाते हैं हम
इस बार पता नहीं मुझे
लेकिन ये अहसास है
अब मेरी रूह बूढ़ी है
और अब उसके जीवन के सफ़र का
आखरी पड़ाव है।

अमृता

मुझे तुम मिले
तुम्हारी नज़रों से एक नयी दुनिया देखी
वो दुनियाँ जिसने मुझे ज़िन्दगी के
नए मायने बताये
एक रास्ते पे चल निकली मैं
जहाँ मुझे किसी के साथ की जरूरत नहीं
सच कहूँ तो तुम्हारी भी नहीं
क्योंकि मुझे
तुम्हारे शब्दों के सहारे
ये सफ़र तय करना है
और जानती हूँ मैं ये सफ़र मुझे
जीवन की उन गहराइयों में ले जाएगा
जिसकी मुझे तलाश थी।

मन का द्वार

मेरे मन का द्वार खुला रखा है
तुम्हारे लिए
क्योंकि मुझे पता है
एक दिन तुम आओगे
वैसे ही जैसे शबरी के राम आये थे
अहिल्या को फिर से एक रूप देने
तुम्हारें बिना पत्थर ही तो थी में
तुम्हारे साथ के अहसास भर से
देखो कितना भाव पूर्ण हो गया
मन मेरा...

अ मन

मेरा मन
जो अनवरत चलता रहता है
विचारों का सैलाब लिए
बिना ठहरे बिना थके
मीलों दूर सदियों तक
अ मन होने की दौड़ में
लेकिन मन क्या ठहराव पाता है ?
क्योकि जब मन ठहर जाता है
तो मन कहाँ रह पाता है
अ मन हो जाता है
तब एक अनुभूति होती है
आत्मतत्व की पहचान की।

शब्दों की खनक

जब मैं तलाशती हूँ
तुम्हारी खामोशी
और मेरी बातों के मायने
कल एक घुंघरू की झंकार
का ख़याल मन में आ गया
वैसे ही तो तुम
उस घुंघरू के दाने जैसे
जिस दिन
मन के खोल से निकल जाओगे
शब्द खनखना छोड़ देंगे।

नया साल

जब तुम मुस्कुरा दो
मेरे लिए तो वही नया साल है
जब तुम मेरी राहों में कदम बढ़ा दो
मेरे लिए वही नया साल है
जब तुम कह दो कि तुमसे जीवन है
मेरे लिए तो वही नया साल है
जब मुझे ये अहसास हो जाएगा कि
तुम्हारें जीवन का हर रंग मुझसे है
मेरे लिए वही नया साल है
जब तुम कह दोगे मुझे कि
तुम्हारें दिल की धड़कन मैं हूँ
बस मेरे लिए वही नया साल है...।

तुम तक

छोटा सा मन अक्सर सोचता था
तुम ऊपर वाले हो
बादल में रहते हो
तुम्हे पाने का कौतुहल
सदा से रहा है मन में
यूँ तो अब
एकांत में अहसास हो तुम
फिर भी मचलते हुए
बाल सुलभ मन ने
देखो आज बादलो की पगडण्डी
बनवायी है तुम तक पहुंचने की।

(बादल के टुकड़ों पर कदम रख चलना चाहता है यह मन)

तुम

तुम्हें किस रिश्ते में बाँधू मैं
हर कदम पे एक
अलग अंदाज में दिखाई देते हो
तुम्हारे दिल में जो दर्द है
उससे परेशान तुम
कभी मुझे एक नन्हे से बच्चे नज़र आते हो
और में तुमसे अपने आपको बहुत बड़ा समझ
तुम्हारा सिर अपनी गोद में रख उसे
सहलाना चाहती हूँ
एक माँ की तरह
कभी तुम्हारी मोहब्बत भरी नजरों में
एक प्रेमिका बन में खुद को तलाशती हूँ
जब तुम बेबस और परेशान से बेचैन
अपने लड़खड़ाते कदमों से चले जाते हो
एक दोस्त बन तुम्हारा हाथ थामना चाहती हूँ
और जब तुम अपने जीवन का अनुभव कहकर
राह दिखाते हो
तो यक़ीन मानो
मैं तुम्हारी बिटिया बन जाना चाहती हूँ।

तस्वीरें

तस्वीरों की दुनिया
क्या है
बीते वक़्त की छुअन
जाते हुए लम्हों की खूश्बू
खुशनुमा मंज़र
जिसे हम क़ैद करना चाहते हैं
हमेशा के लिए हमारे पास
ताकि वो स्मृति बनी रहे
हमारे मानस पटल पर
याद कर सकें
उस वक़्त मौजूदा साथ को
उसके अहसास को
एक रोशनी की तेज आहट पे
मंज़र का क़ैद हो जाना
समय की चट्टानों पे
तराशा गया हो शिलालेख कोई।

ज़िन्दगी के पल

ज़िन्दगी के पल क्या है
क्या है हर साथ का मिलना
उम्र के अलग अलग पड़ाव पे
महज घटनाएं हैं जीवन की
जिनमें अपना किरदार निभाए
चले जाते हैं हम
सही गलत की उलझनों को
सुलझाते हुए
अपनों के साथ होने ना होने को
समझते समझाते हुए
बंधना नहीं है मुझे
किसी साथ से
कई घटनाओं को जीना है
ज़िन्दगी मानकर
जानकर उनके मिलने का उद्देश्य
ताकि बाधित ना हो मेरा मार्ग
किसी मोह से धागे से...।

जानते हो

विचार कभी ठहरते नहीं हैं
चलते रहते हैं अनवरत
जीवन में आने के साथ ही
शुरू हो जाता है ये सिलसिला
विचारों के धागे उलझते जाते हैं
अंतर्मन में
खुद से बात करने लगते हैं हम
वो बात जो कोई दूसरा समझ नहीं सकता
खुद से कह लेते हैं हम
और कोई बात कहने से पहले एक शब्द
एक संबोधन देती हूँ मैं
जानते हो...
और फिर अपनी बात कह जाती हूँ
ये जानते हो का सिलसिला कब शुरू हुआ पता नहीं
लेकिन चलेगा जब तक मैं हूँ
जानते हो...
एक अहसास है जो
सबसे करीब है, सबसे अज़ीज़ है
ये सिर्फ अहसास है निराकार
उस अहसास का शब्द रूप
वो जो कभी था ही नहीं...।

बादल और पहाड़

बादल और पहाड़ों के बीच रहकर
मैंने कभी तुम्हें बादल बनाया
कभी में पहाड़ बनी
जब तुम्हें एक बादल के रूप में देखा
तो बरस रहे थे तुम गरज़ कर
पहाड़ पे लगातार
और जब मैं बादल बनी
तो पहाड़ के काँधे पे सहारा ले
उसे गले लगाया
उसे अपनेपन का अहसास कराया
दोंनो ही सूरत में
मैंने तुम्हें गरजते बरसते
पत्थर मन ही पाया...।

रिश्ते

जानते हो कुछ रिश्तों की मुश्किल
उलझे हैं जलेबी जैसे
डूबे हैं मीठी चाशनी में भी
एक ने कहा पाव भर चाहिए
और दूसरा ढाई सौ ग्राम मांगता है...
स्वाद वही बात वही लेकिन
ज़िन्दगी है ना जलेबी जैसी
मीठी लेकिन उलझी हुई।

सब तेरा

ये सूफ़ियाना अंदाज़
मुझे इतना मेरा लगता है...
कि उसे देख कर ऐसा लगता है
इस अंदाज को आत्मसात कर लूं मुझमें कहीं
ये अंदाज यही सिखाता है ना
ना पाने की खुशी ना खोने का ग़म
बहता चल ज़िन्दगी की रौ में
सब तेरा का भाव लिए...।

तलाश

एक चाहत
हर कदम पर
रोशनी बिछाने की
तुम और मैं
उसी रोशनी पर चलकर
एक राह ढूंढते हैं
अपना आदि और अंत ढूंढने
की कोशिश करते
चले जाते हैं...।

चाँद से बातें

कल रात अचानक
एक दस्तक हुई मेरी पलकों पर
आँख खुली तो खिड़की के बाहर
बादल और चाँद के साथ का
सुहाना मंज़र बहुत सुंदर नज़र आ रहा था
देखा उसे नींद को रोक कई देर तक
जानते हो उस अधूरे चाँद में की मुस्कुराहट में
तुम्हारी मुस्कुराहट का अक्स नज़र आ रहा था
ख़्वाब नहीं था एक सच्चा अहसास था
एक सवाल खड़ा कर गया वो लम्हा
कि क्या याद का वो पल
मीलों दूर भी जिया जा रहा था...
क्यों मुझे वो अधूरा चाँद बेवजह
तुम्हारी याद दिला रहा था।

चाय

चाय का नींबू वाला स्वाद
अक्सर मुझे माँ की याद दिलाता है
जब भी फोन पे आवाज़ बैठी हुई होती है
तुरंत कहती है
नींबू चाय पी ले
और में मुस्कुरा कर
बना कर पी लेती हूँ
अब तो मेरी ज़िन्दगी की
हर सुबह का हिस्सा हो गयी है
नींबू की चाय
कड़क काली मिर्च
मीठा शहद
खट्टा नींबू
और थोड़ा सा नमक
ज़िन्दगी के अलग-अलग स्वाद का अनुभव
जिसमें याद है एक फिक्र की
जिसमें ताकत है
ज़िन्दगी से रूबरू हो कर
सामना करने की
बिल्कुल खट्टी मीठी
ज़िन्दगी के स्वाद सी
नींबू वाली चाय।

चिड़िया

एक चिड़िया की काँटों भरी डगर
यूँ तो पँख है उस राह को पार करने को
लेकिन मन का एक तार जुड़ा है इस
डाल की राह से
मोह के धागे बंधे हैं
इस डाल के हर कोने से ...
सारा कुसूर उस सागर का है
जिसकी उफ़ान खाती हुई लहरों पे चल
एक दूसरी डाल आ कर रुकी थी
इसी नन्ही चिड़िया के लिए ...।

अमावस

खुले आसमान के नीचे बैठ
अभी ख्याल आया
तुम्हें कहूँ
मुझे आज का चाँद चाहिए
तलाशा आसमान में
फिर याद आया
आज अमावस है...
बस ऐसा ही होता है अक्सर...
हर चाहत के साथ...।

प्रश्नचिह्न

ज़िन्दगी जीते हुए एक दिन अचानक
अहसास होता है कि
ये जो हाड़ मॉस का बना शरीर है
इसे चलाने के लिए एक रूह रहती है इसके अंदर
और उस रूह की कई परतें है
कई जन्मों का लेखा जोखा लिए
ये परतें खुलती जाती है उम्र के साथ
और हम प्रश्नचिह्न लगाकर
उन लम्हों के आगे कई सवाल खड़े कर देते हैं
जवाब कुछ नहीं मिलता
मन की परतें जो कहती है
उसे मानते चले जाते हैं
यादें, आँसू, सपने, शब्द
सब उन्हीं परतों के बीच
खुद को उलझा पाते हैं
इन्हीं परतों के बीच ही तो
खुद के होने की वज़ह
समझ पाते हैं।

कल रात

एक आहट सी हुई
दरवाज़े पर
देखा तो तुम थे
अपने चिर-परिचित अंदाज़ में
मंद मुस्कुराहटें लिए
ना शब्द थे, ना बात हुई
ना ही पास बैठ मुलाकात हुई
तुम चाय पीना चाहते थे
और मैंने अपने एहसास का हर लम्हा
अदरक के साथ कूट कर
मिला दिया था उसमें
लेकिन ये क्या
तुम तो वहाँ नही थे
शायद एक अधूरा सा ख़्वाब था.....
अब यादें भी चाय के कप सी हो गयी है
तन्हा होते हैं तो ले कर बैठ जाते हैं।

अलौकिक संसार

मृत्यु को जानने की कोशिश की है मैंने
उन तहों तक पहुँचने की कोशिश कई बार
की है मैंने
जो हमारे बंधनों की नींव है
उन परतों को अक्सर संभाला है मैंने
जहां कुछ अहसास जन्म लेते हैं
बिन वजह...
कोई तो वजह होगी उनके होने की ?
इस बात की तफ्तीश की है मैंने
मृत्यु को करीब से देखा है
अपने अज़ीज़ को खो देने का डर
इसका भी अहसास है मुझे
ज़िन्दगी से परे
मैं तलाशता हूँ
उस अलौकिक खूबसूरत संसार को
जहाँ चले जाने के बाद
कोई लौट कर नही आता
चाहे कितना भी अज़ीज़ हो
कोई कितना भी करीब हो।

दोस्त

जब मिलो मुझसे
तो वैसे ही मिलना
जैसे पहले मिला करते थे तुम
रेत के लड्डू फेंकते हुए
मुझे तुम्हारे ब्रांडेड कपड़ों का ख़याल ना करने पड़े
रेत के घरोंदे बनाते हुए
तुम्हारे महंगे जूतों की फिक्र ना हो
चाय की चुस्कियों के साथ
पारले जी का बिस्किट तुम्हें भी याद आए
मिलो अगर तारों की छाया में तो यूँ ही मिलना
जैसे बिंदु मिलाते थे बचपन में
घटाओं में कभी मिल जाओ तो
वहीं आकार बनाना बादलों के
बारिश की बरसती बूंदों में मिलो तो
भीगने से डरना मत
बहा देना इसमें सब दर्द जीवन के
चाँद की चाँदनी में मिलों अगर
तो बाहें फैला समेट लेना उस चाँदनी को दामन में
सूरज की रोशनी में मिलों तो
मैग्निफाइंग ग्लास से जला देना सारे शिकवे
कभी मिलो मुझसे तो मुझे मेरे वही दोस्त बन के मिलना
जिसके साथ से मुझे पूर्णता का अहसास है
पद प्रतिष्ठा को परे रख कभी मिलना मुझसे
उसी में हमारे जीवन की मिठास है।

नींद का बादल

कल रात एक अजीब सा भारीपन था दिलो दिमाग पर न जाने क्यों
यूं लग रहा था मानो एक बड़ा काला सा बादल
घर कर गया है मेरे मन के अंदर
न बरसता है न बिखरता है
बस अपनी जगह बनाकर
एक बेचैनी भरा समां बना लिया है चारों तरफ
कल रात आंखों में नींद थी लेकिन
सुकून नही था...।

नज़्म

फ़लक पर पूरा चाँद
जब मेरी खिड़की के रास्ते
चाँदनी बिखेरता है मेरे आँगन में
मन करता है उस चाँदनी को
कलम में भर कर
एक नज़्म तुम्हारे नाम लिखूं।

मैं समन्दर तुम लहर

मैं प्रेम का समन्दर हूँ
और तुम उसमें उठती लहर
कभी शांत कभी तीव्र गति से
भूल जाते हो कभी कभी
कि तेज बहाव
मुझे ठेस भी पहुँचाएगा
बस उफ्न कर बाहर निकल जाते हो
और मैं हर बार अपने स्वाभिमान को
किनारे रख तुम्हें फिर से
समाने देती हूँ
खुद के अंदर
क्योंकि जानती हूँ मैं
मेरी गहराइयों में समाये
सीप और मोती
इसी उछाल से बाहर आएंगे।

ख़्वाब

ख़्वाबों में जब
आसमान में चहलकदमी करती हूँ
ये तारे चुभते है पग की हथेलियों में
बैठ कर बुहारती हूँ तो
हाथ की रेखाओं में चमक बैठ जाती है
चाँद से कहती हूँ
यूँ मत टूट के बिखरा करो
सुबह होते ही ये दुनिया
मेरे रात के सफ़र को
पहचान जाती है।

ख़्वाहिश

मेरा नन्हा सा मन
पलक का टूटा बाल
मुट्ठी पे रख
फूंक से उड़ा
स्कूल की छुट्टी मांगता था
और अगले दिन रविवार आ जाता था
काश ज़िन्दगी की हर हसरत
एक पलक के टूटे बाल से पूरी हो जाती।

फिर से सीखने को जी चाहता है

एक स्कूल बना दे कोई
परियों की दुनिया जैसा स्कूल
जहाँ छत पर बने बादलों को जोड़ता इंद्रधनुष हो
वहीं दीवारों पे उड़ती हुई परियां
मुस्कुरा कर मेरा स्वागत कर रही हो जैसे
और रंग बिरंगी पेंसिल यूँ बिखरी हुई हो
दीवारों पे कि उनसे
एक नई दुनिया लिख लूँ अपने लिए
फिर से वर्णमाला सीख
एक नई कविता लिख दूं
दूसरे कमरे की छत पे टंगा हुआ हो गिटार
बिल्कुल मेरी अधूरी हसरत जैसा
और साइड की दीवार पे एक की बोर्ड बना दे कोई
उसे देख गुनगुनाने को जी चाहे
फिर भर्ती मिल जाए इस स्कूल में
ज़िन्दगी फिर से सीखने को
जी चाहता है कभी कभी।

तुम बहुत याद आ रही माँ

आज मन उदास सहमा सा था
सर्द हवाओं के झोंके
और मुझे तोड़े जा रहे हैं
ना जाने क्यों
आज तुम बहुत याद आ रही हो
मुझे थामने के लिए
अपनी गोद में बैठा
अपनी बांहों की नरमी देने के लिए
लेकिन दूरियों में कैसे बयां करूँ
अपने दर्द को
अलमारी से तुम्हारा वो शॉल
निकाल कर ओढ़ लिया माँ
अब अक्सर ऐसे ही समझा लेती हूँ मन को।

अधूरी सी मुलाकात

अधूरी बातें
अधूरी मुस्कुराहटें
अधूरे आँसू
और अधूरे वादे
सब कुछ तो अधूरा रहा
उस अधूरी सी मुलाकात में।

उम्र की कहानी

ज़िन्दगी की धूप में तपकर
बेरंग सा
एक अनुभव सा नज़र आता है
लाख सहेज लो अपने बचपने को
अपने अंदर
कनपटी पे आया सफ़ेद बाल
उम्र की कहानी कह जाता है।

एक सफ़र भूटान का

हर मंज़र इतना ज़िन्दगी से भरा है कि
हर कदम पे एक शब्द नज़र आ जाता है
बादल मेरे हाथों को छूकर
कुछ नए शब्द पकड़ाने की कोशिश करते है
और ठंडी हवा मेरे बालों को सहलाकर
कुछ गुनगुना कर गुज़र जाती है
शब्द तो मानो यूँ बिखरे पड़े हैं
इन पहाड़ी राहों में
कि जी चाहता है
एक टोकरी में भरकर ले आऊँ तुम्हारे पास
वैसे ही जैसे तुम पलाश के फूल भरा करते थे
होली के रंग बनाने के लिए
शायद ये शब्द जीवन का वो रंग लौटा दे।

चाँद

चाँद...
यूँ तो बरसों से
मेरी नादानियाँ
तुमसे कहती आयी हूँ
वो अल्हड़ नादान बचपन की बातें
कभी कभी अपने बड़प्पन पे भी इतराई हूँ
और तुम दूर से
कितनी खामोशी के साथ
मेरी हर बात सुनते हो
बिना कुछ कहे
लेकिन आज मैं चाहती हूँ
मेरी मेहंदी से महकती हथेली में
तुम उतरो
और रोशन कर जाओं मेरी ज़िन्दगी का
हर लम्हा अपने नूर से।

हाथों में हाथ थाम

हाथों में हाथ थाम
हरी दूब पर जब हम चहलकदमी करते हैं
केसरिया रंग में रंगी हुई शाम
कितनी सुहानी हो जाती है
वहीं पीला दुप्पट्टा ओढ़े तुम
गालों पे सुर्ख़ गुलाबी रंगत लिए
क्यारी में खिले बैंगनी फूलों को
निहार रही हो
और मैं उस नीले पेन से तुम्हारे लिए
एक आसमां बना देना चाहता हूँ
एक उड़ान भरने के लिए
इन रंगों से तुम्हारे लिए
पँख बना देना चाहता हूँ
कितनी खूबसूरत दुनिया है ना
रंगों की कल्पनाओं की।

उस शहर की राहों पे

सृजनहार के इस खूबसूरत जहान को
मैं देखना चाहता हूँ
उस शहर की राहों पे
चहलकदमी करना चाहता हूँ
जहां की हवाएं बहती हुई
मेरी खुशबू तलाश रही है
जिस शहर के समंदर की लहरें
मेरे क़दमों को चूमते हुए
अठखेलियाँ करना चाहती है
उस किनारे पे कुछ समय
मैं भी गुज़ारना चाहता हूँ
किसी शहर की नदी का बहाव
ले चले मुझे भी एक नए बहाव में
जीवन में मैं भी वो बदलाव चाहता हूँ
जिस जगह का बादल नीचे झुक कर बरसे
मैं भी उस बादल को छू कर महसूस करना चाहता हूँ
जिस शहर के देव मेरे लिए रास्ते खोले
उस शहर में जाने के
उस शहर की दिव्य अनुभूति
मैं भी महसूस करना चाहता हूँ
जिस शहर का आलम मेरे रंग में रंगा हुआ मुझे पुकारे
मैं भी उस शहर की एक याद सहेजना चाहता हूँ।

पड़ाव

आसमान से जब
नर्म रुई के फाहे सी
बर्फ़ गिरती है
हवा का झोंका
उसे एक बहाव में ले जाता है
और ठहर जाती है
किसी सहारे वो बर्फ़
एक जमाव ठोस रूप लिए
वैसे ही जैसे तुम्हारी याद का बहाव है
और उसका पड़ाव है मेरा मन
उस बर्फ़ को इंतज़ार है एक टुकड़ा धूप का।

राधा और कृष्ण

राधा एक नाम
कृष्ण की पूर्णता का
जिसके बिना कृष्ण अधूरे हैं
वो शक्ति है
जहां सर्वशक्तिमान भी
ठहराव और सुकून चाहते हैं
कृष्ण जब भी शक्ति
अपने अंदर संगृहीत करना चाहते
वो बांसुरी की तान पर
राधा को पुकारते
और राधा सम्मोहित हो
उस धुन पर खिंची चली आती
राधा वो कविता है जिसे कृष्ण लिखते हैं
राधा वो धुन है जिसे कृष्ण बजाते हैं
राधा वो नृत्य है जिसे कृष्ण करते हैं
राधा वो कला है
जहाँ से श्री कृष्ण ऊर्जा पाते हैं
राधा एक स्वतन्त्रता का अहसास है
जिसे महसूस किया जाए तो
मन और विचार उन्मुक्त हो
उड़ान भरते हैं।

तुम

तुम त्यौहार बन कर मत आना मेरे जीवन में
जिसके चले जाने का सूनापन मेरे मन को बेचैन करे
तुम हर दिन की गति बन रहना मेरे जीवन में
जो सूरज की लालिमा के साथ उग कर
चाँद की चाँदनी जैसी मेरे साथ हर दम रहे।

प्रकाश पर्व

जी चाहता है मेरा
एक ऐसी रात मेरे जीवन में भी आए
आसमान में पूरा चाँद हो
और खामोश साथ को
अपनी चाँदनी से रोशन कर जाए
नि:शब्द और निर्भीक सा साथी
अमृत के सरोवर का किनारा हो
ये प्रकाश पर्व इसी जीवन का हो
और मेरी रूह को उसका किनारा मिल जाये।

आवरण

बहुत गहरे मायने होते है
आवरण बन जाने के
जैसे दुःख पर सुख का
सूरज पे बादल का
समंदर पे लहर का
पानी पे पानी का
ना अलग होने जैसा
जिस पर कोई लकीर ना खींच सके
जिसको कोई अलग ना कर सके
बहुत गहरे मायने होते हैं
रंग रंग में मिल जाने के
कुछ बनने ना बनने की
परवाह से बेफिक्र बेपरवाह
बहुत गहरे मायने होते हैं
एक बहती रूह का किनारा बन जाने के।

वैरागी मन

सरल, गंभीर विराट और रहस्मय
परम प्रेम के अनुगामी
और परम वैरागी
जीवन का समस्त स्वीकार भाव
जिनके साथ प्रेम पर्वत सी ऊंचाई प्राप्त करता है
और वैराग जिसकी सर्वोच्च छोटी है
रोमांच, जूनून और हठ
सहयात्री बन साथ चलते हैं
जीवन का विषपान करते नीलकंठ
ज़िन्दगी के जमाव बिंदु पर
शिव...
जहाँ प्रेम वैराग प्राप्त करता है।

पत्थर की मूरत से तुम

सुन रहे हो ना तुमसे ही कह रही हूँ
पत्थर की मूरत हो
सुनते नही हो
पता है मुझे
लेकिन मैं भी अपनी आदत से मजबूर
हर दिन का अनुभव तुमसे कहना चाहती हूँ
कह भी देती हूँ
और तुम भी सुनने का दस्तूर निभा लेते हो
जानते हो आज मिला था कोई
जो कह रहा था वो भी तलाश में है तुम्हारी
और मैंने एक दबी सी मुस्कुराहट से
नज़र झुका कर तुम्हें देख लिया
मन मंदिर में
अलग कहाँ हो तुम मुझसे
आत्मसात हो मुझमें...
हो ना ?

असुरक्षित यात्रा

सुरक्षित लिखकर सुरक्षित रहकर
कोई कहीं नही पहुँच सकता
चलना जरूरी है
विचारों का चलना
भी तो उन्मुक्तता है
जो हर रो मुझे तुम तक पहुँचा देते हैं
हो सकता है मेरी बात, मेरी कविता
साहित्य के किसी भी नियम पर
खरी ना उतरे
लेकिन अपने देवता के समक्ष
प्रस्तुत होने का भी कोई नियम है भला
हर रात तो वो नाम सिरहाने रख कर सोती हूँ
और चली जाती हूँ
सपनों की असुरक्षित यात्रा में...।

वेनिस

एक शहर है
मेरे सपनों का
जो घिरा है चारों तरफ पानी से
वैसे ही जैसे
हकीकत की दुनिया में
में घिरी हूँ
इस संसार सागर से
कभी कभी मुझे आभास होता है
एक कश्ती में बैठ मैं
पहुँच गयी हूँ
उसी सपनों के शहर में
अपनी पतवार से
आती हुई लहरों को पीछे
धकेलते हुए
तभी एक रेत से भरा बवंडर
मुझे छू के गुज़र जाता है
मेरी हक़ीक़त के शहर का आभास
दिला जाता है
कभी तुम उस शहर से गुजरो
तो पूछ लेना उन लहरों को
क्या डूब गया था कोई
सदियों पहले यहाँ!

मेरी प्रेरणा

मुझे नही पता मेरे शब्दों में कितनी ताकत है
किसी के दिल को छू जाने की
लेकिन मैं ये जानती हूँ
मेरे शब्दों की ताकत मेरे भाव है
और मेरी भावनाओं की ताकत...
उसे भी में पहचानती हूँ
मुझे नहीं पता ये शब्द मुझे जीवन में
कोई मुक़ाम हासिल करने में मददगार होंगे
लेकिन अगर कुछ हासिल हुआ तो
उस ऊँचाई से ही
आँखें मूँद उस रब को
तुमसे मिलाने का शुकराना कह दूंगी
मेरी प्रेरणा तुम्हें दूर से ही सब कुछ
नज़र कर दूंगी।

अंशु हर्ष

मिडिया एंटरप्रेन्योर अंशु हर्ष एक मंथली मैगज़ीन **सिम्पली जयपुर** और एक वीकली न्यूज़ पेपर **वॉयस ऑफ़ जयपुर** की सम्पादक और पब्लिशर हैं। सिनेमा में रुचि कारण राजस्थान इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल की फाउंडर भी हैं और रिफ फिल्म क्लब की ट्रस्टी भी। उन्हें लगता है फिल्मों की कहानियाँ जीवन का प्रतिबिम्ब हैं और उन कहानियों में ताकत है जीवन को एक दिशा देने की इसी बात को ध्यान में रखते हुए बच्चों को अपने क्लब के अंतर्गत फिल्में दिखाती हैं।

शब्द उनकी ज़िन्दगी हैं, हर लम्हे को महसूस कर उसे शब्द रूप देकर कविता और कहानी के रूप में कागज़ पर उतार देना उनके हर दिन का हिस्सा है। अपने आस पास के वातावरण को महसूस कर हर दिन नयी कविता उनकी कलम से सहजता से बस यूँ ही बन जाती है। कविता लिखने की प्रेरणा अपने आस पास के वातावरण से मिलती है। कुछ मुलाकातें, कुछ अनुभव, कुछ घटनाएँ और कुछ सपने बस अकेले बैठ मन में एक जाल सा बन जाता है जो शब्दों के समंदर में से कुछ शब्द चुन कर कविताओं के रूप में बाहर आता है। कुछ तस्वीरें भी नया लिखने के लिए प्रेरित करती हैं।

₹ 199.00

ISBN : 978-93-88686-55-6

बोधि
साहित्य जन-जन के लिए

बोधि जन-संस्करण
आवरण : सोमेन्द्र हर्ष